Toppersnotes
Unleash the topper in you

C-TET

सेंट्रल टीचर एलिजिबिलिटी टेस्ट

CENTRAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION

उच्च प्राथमिक स्तर (विज्ञान)

भाग – 1 (अ)

हिन्दी

SIERRA INNOVATIONS

INDEX

Hindi Language Pedagogy

1. हिन्दी भाषा 1
2. भाषा अधिगम और भाषा अर्जन 3
3. व्याकरण शिक्षण 6
4. भाषा शिक्षण के सिद्धान्त 9
5. भाषा शिक्षण के सूत्र एवं विधियाँ 12
6. भाषा कौशल एवं इसके प्रकार 17
7. भाषा शिक्षण में सुनने और बोलने की भूमिका 26
8. बच्चों में भाषा सम्बन्धित त्रुटियां 28
9. बच्चों में भाषा सम्बन्धित विकार 30
10. बहुभाषिकता/भाषायी विविधता वाले कक्षा कक्ष की चुनौतियां 33
11. मूल्यांकन विधियां एवं सहायक सामग्री 37

Hindi Grammar and Comprehension

1. गद्यांश और उस पर आधारित प्रश्न उत्तर 43
2. पद्यांश और उस पर आधारित प्रश्न उत्तर 49
3. हिन्दी भाषा 53
4. हिन्दी साहित्य 54
5. वर्णमाला 63
6. विराम चिन्ह 70
7. शब्द भेद 71
8. संधि 80
9. समास 89
10. संज्ञा 94
11. सर्वनाम 96
12. विशेषण 97
13. क्रिया 98

14. वाच्य 100
15. काल 101
16. अव्यय 102
17. अलंकार 104
18. रस 110
19. छन्द 115
20. पर्यायवाची 119
21. विलोम शब्द 121
22. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द 123
23. वर्तनी 126
24. प्रमुख लेखक व उनकी रचनाएँ 128
25. मुहावरे एवं लोकोक्ति 134
26. भाषा शिक्षण पर आधारित प्रश्न उत्तर 136
27. अभ्यास के लिये बहुविकल्पी प्रश्न 144
28. CTET Junior प्रश्नपत्र जून और दिसम्बर – 2019 176

भाषा

① औपचारिक भाषा

① विद्यालय में प्रयोग होने वाली भाषा|

② जो लोग के पढ़े-लिखे समाज द्वारा स्वीकृत भाषा|

② अनऔपचारिक भाषा

① घर-परिवार की भाषा जो माता-पिता समाज, पड़ोस, परिवेश, जनसंचार द्वारा उपयोग में लायी जाती है उसे अनौपचारिक भाषा कहते हैं|

③ राष्ट्रभाषा → हि भारत की कोई भी राष्ट्रभाषा नही है क्योंकि
(लोकभाषा) (लिंग्वा फ्रांका)
भारत बहुभाषायी देश है| यहाँ विभिन्न प्रकार के लोक निवास करते है और उनके द्वारा अलग-2 प्रकार की भाषाओं का प्रयोग किया जाता है|

④ राजभाषा → अर्थ = "सरकारी काम काज की भाषा" हमारी राजभाषा 'हिन्दी' है भारत में संविधान के अनुच्छेद 343(1), भाग-17 के अनुसार हिंदी को राजभाषा घोषित किया गया जिसके द्वारा संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी|

★ 14 - सितम्बर 1949 को निर्णय लिया गया की हिन्दी भारत संघ की राजभाषा होगी और 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है|

⑤ राज्यभाषा → जिस प्रदेश की राज्य सरकार द्वारा उस राज्य के अर्न्तगत प्रशासनिक कार्यो को सम्पन्न करने के लिये जिस भाषा का प्रयोग किया जाता है उसे राज्यभाषा कहा जाता है|

Toppersnotes
Unleash the topper in you

मातृभाषा ⇒ घर-परिवार, माता पिता, आस पड़ोस, जिस परिवेश में निवास करते हैं वहाँ उपयोग में लायी जाने वाली भाषा मातृभाषा होती है बच्चे सर्वप्रथम मातृभाषा का ज्ञान अर्जित करते हैं अतः उनकी यह प्रथम भाषा होती है।

① मातृभाषा से ही बच्चे का मस्तिष्क सबसे पहले क्रियाशील होता है।

② मातृभाषा विचार विनिमय और शिक्षा ग्रहण करने का सर्वश्रेष्ठ माध्यम है।

③ प्राथमिक स्तर पर शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होना चाहिये।

हिन्दी भाषी राज्य →

1. उत्तर प्रदेश
2. मध्य प्रदेश
3. हिमाचल प्रदेश
4. बिहार
5. हरियाणा
6. राजस्थान
7. छत्तीसगढ़
8. दिल्ली
9. झारखण्ड
10. उत्तराखण्ड
11. अण्डमान निकोबार

महत्वपूर्ण तथ्य —

① भाषा सम्प्रेषण का सर्वप्रथम माध्यम है।

② भाषा का प्रभाव जटिलता से सरलता की ओर देखा जाता है।

③ भाषा स्मृतिकोष / शब्दकोष का भी काम करती है।

④ भाषा पैतृक सम्पत्ति नहीं है और यह नियम बद्ध है तथा इसकी भौगोलिक सीमा होती है।

⑤ संयुक्त परिवार में बच्चों का भाषा विकास एकल परिवार की तुलना में अच्छा होता है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

2. भाषा अधिगम और भाषा अर्जन

भाषा → "भाषा वह साधन है जिसके द्वारा हम अपने विचारों को एक दूसरे के सामने व्यक्त करते हैं। भाषा मुख से उच्चारित होने वाले शब्दों और वाक्यों आदि का वह समूह है जिनके द्वारा मन की बात बतलाई जाती है सामान्यता भाषा को वैचारिक आदान- प्रदान का माध्यम कहा जाता है।"

भाषा का आरंभ मानव के जन्म के साथ ही हो जाता है। विभिन्न भाषा कौशल जैसे सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना को पूरा करते हुये व्यक्ति भाषा में निपुणता प्राप्त करता है भाषा ग्रहण करने की एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है।

अर्थ- भाषा संस्कृत की "भाष्" धातु से उत्पन्न हुई है जिसका अर्थ है - बोलना

भाषा की प्रकृति →1. भाषा संस्कृति और सभ्यता से जुड़ी होती है
2. भाषा में सीमा बद्धता होती है।
3. प्रत्येक भाषा की अपनी लिपि होती है। जैसे- हिंदी = देवनागरी लिपि
अंग्रेजी = रोमन, उर्दू = फारसी।
4. भाषा अनुकरण से सीखी जाती है।
5. भाषा एक अर्जित संपत्ति है जिसे प्रयोग के माध्यम से हम ग्रहण कर सकते हैं, और इसे आदान -प्रदान करके इसका विस्तार होता है अतः यह पैतृक नहीं है।
6. भाषा एक सामाजिक एवं परंपरागत वस्तु है।
7. भाषा में निरंतर परिवर्तन होता रहता है अतः यह परिवर्तनशील है।
8. भाषा कठिनता से सरलता की ओर अग्रसर है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

भाषा अर्जन

अर्जन का अर्थ है = " अर्जन माना किसी भी भाषा को व्यक्ति स्वयं के प्रयासों द्वारा अर्जित कर सकता है तथा भाषा एक अर्जित संपत्ति है।"

1. बालक अपने चारों ओर के वातावरण में जिस प्रकार लोगों को बोलते हुये सुनता है एवं लिखते हुये देखता है उसे वो अनुकरण (नकल) द्वारा सीखने का प्रयत्न करता है। अर्थात भाषा का अर्जन अनुकरण द्वारा होता है।

2. भाषाई योग्यता एक कौशल है, जिसे अर्जित किया जाता है। अर्जन की प्रक्रिया बालक के जन्म से प्रारम्भ होती है।

3. भाषा अर्जन में अभ्यास की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

4. भाषा अर्जन द्वारा बालक अपनी प्रथम भाषा को सीखता है जो इसकी मातृ भाषा होती है।

5. भाषा अर्जन एक अचेतन प्रक्रिया है भाषा सीखने वाली सामानता इस बात से अभिज्ञ होते हैं की वो भाषा सीख रहे हैं।

6. भाषा अर्जन का अर्थ है भाषा को अप्रत्यक्ष अनौपचारिक और स्वभाविक रूप से सीखना।

चॉमस्की के अनुसार, " बच्चे भाषा अपने वातावरण से अर्जित करते हैं उनके अंदर जन्मजात भाषा अर्जन युक्ति होती है"

भाषा अधिगम

भाषा, अधिगम का अर्थ है - सीखना.

* अधिगम एक मानसिक प्रक्रिया है जो जन्म से मृत्यु तक अतः जीवन भर चलती रहती है।
* अधिगम में बालक परिपक्वता की ओर बढ़ता है।
* सीखना अनुभव द्वारा मनुष्य के व्यवहार में परिवर्तन है।

परिभाषा -

क्रो एवं क्रो के अनुसार, "सीखना आदतो ज्ञान एवं अभिवृत्तियों का अर्जन है"।

पावलॉव के अनुसार, "अनुकूलित अनुक्रिया के परिणाम स्वरूप आदत का निर्माण ही अधिगम है।"

गेट्स के अनुसार, "अनुभव द्वारा व्यवहार के रूपांतर लाना ही अधिगम है।"

वुडवर्थ के अनुसार, "सीखना विकास की प्रक्रिया है"

विशेषताएं -

1. सीखने की प्रक्रिया जन्म से मृत्यु तक अर्थात जीवन भर चलती है।
2. सीखना परिवर्तन है - व्यक्ति अपने और दुसरो के अनुभव से सीख कर व्यवहार विचारो इच्छाओ भावनाओं आदि मे परिवर्तन करता है।
3. सीखना सार्वभौमिक (Universal) है सभी जीव-जन्तु सीखते हैं।
4. सीखना अनुभव का संगठन है सीखना नए पुराने अनुभवो का संगठन है।
5. सीखना व्यक्तिगत सामाजिक होता है।
6. भाषा अधिगम मे भाषा का औपचारिक ज्ञान/प्रत्यक्ष रूप से सीखना शामिल होता है।

Note:- भाषा अधिगम मे उन क्षेत्रो को कठिनाई नही आती जिनका मानसिक स्वास्थ ठीक हो यदि उनका स्वभाव संकोची और आत्मविश्वास कम हो उन्हे भाषा सीखने मे कठिनाई होगी।

व्याकरण शिक्षण

व्याकरण का शुद्ध प्रयोग करना एक कला है। जिसके चार कौशलो का होना अनिवार्य है जो निम्न प्रकार से है—

1. पढना
2. लिखना
3. बोलना
4. सुनना

* किन्तु भाषा कौशल के आ जाने से बालक केवल अर्थ और भाव की ग्रहण कर पाता है वह भाषा को शुद्ध नही कर पाता है। अत: भाषा में शुद्धता लाने के लिये व्याकरण शिक्षण की आवश्यकता होती है * क्योंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है।
  * वह दैनिक जीवन में आदान- प्रदान करने के लिये भाषा का प्रयोग करता है।
  * भाषा की मितव्यता व्याकरण के माध्यम से आती है।
  * भाषा को एक निश्चित रूप देने के लिये हम लोग व्याकरण का प्रयोग करते हैं।

<u>परिभाषा</u> — "भाषा के रूप की शुद्ध व्यवस्था ही व्याकरण है"।
— <u>वह्यूम फील्ड</u>

"प्रचलित भाषा सम्बन्धी नियमों की शुद्ध व्यवस्था ही व्याकरण है"
— <u>डॉ. आग्र</u>

व्याकरण के शिक्षण उद्देश्य →

① भाषा के शुद्ध रूप को समझने एवं उसमें स्थायित्व लाने के लिये।

② छात्रो को ध्वनियो, ध्वनियों के सूक्ष्म अन्तर एवं उच्चारण के नियमों का ज्ञान कराना।

③. भाषा की मौलिक सीमा होती है और उसका उल्लंघन होने से बचाने के लिये।

(4) विद्यार्थियों में रचना तथा सृजनात्मक प्रवृत्ति का निर्माण, चिन्तन एवं तर्क क्षमता का विकास, कम शब्दों में शुद्धतापूर्वक अपने वाक्यों को व्यक्त करना अपनी अशुद्धता को समझने तथा उसको शुद्धीकरण की स्थायित्व में लाने का विकास करती है।

(5) भाषा के व्याकरण संगत रूप से सुरक्षित रखना।

व्याकरण के भेद

व्याकरण के दो भेद होते हैं।

1. औपचारिक व्याकरण
2. अनौपचारिक व्याकरण

1. औपचारिक व्याकरण → जब बच्चों को पाठ्य पुस्तक की सहायता से विधिवत ढंग से क्रमपूर्वक व्याकरण के नियमों, उपनियमों, अनेक भेदों तथा उपभेदों का ज्ञान कराया जाता है।

2. अनौपचारिक व्याकरण → बच्चों में भाषा सीखना अनुकरण विधि द्वारा होता है वे दूसरों की नकल करके भाषा सीखते हैं।

व्याकरण शिक्षण की विधियाँ →

व्याकरण शिक्षण के लिये निम्नलिखित विधियाँ हैं।

1. आगमन विधि → इस विधि में हम पहले उदाहरणों को तथा फिर नियमों के द्वारा पढ़ते हैं अतः हम उदाहरणों से समान सिद्धान्त निकालते हैं। इस विधि में हम ज्ञात से अज्ञात की ओर, सरल से कठिन की ओर और स्थूल से सूक्ष्म की ओर चलते हैं।

निगमन विधि → जब शिक्षण नियमो पर आधारित होकर करवाया जाता है। तो यह निगमन विधि कहलाती है बच्चे बताये गये नियमो को रट लेते है।

समवाय विधि / सहयोग प्रणाली → इस विधि में भाषा के अन्तर्गत मौखिक या लिखित कार्य कराते समय प्रासंगिक रूप से व्याकरण के नियमो का ज्ञान कराया जाता है।

भाषा संसर्ग प्रणाली → यह विधि उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो के लिये उपयोगी है इस प्रणाली में बच्चो को ऐसे लेखको की रचनाएँ पढने को दी जाती है जिनका भाषा पर पूर्ण अधिकार है। इस विधि में बच्चे व्याकरण के नियमो पर ज्यादा बल न देकर दूसरो द्वारा उच्चारित शब्दो का अनुकरण करके भाषा का शुद्ध रूप प्रयोग करते है।

प्रयोग या विश्लेषण प्रणाली → इस विधि में अध्यापक उदाहरण देकर उनकी व्याकरण तथा प्रयोग के आधार पर व्याकरण के नियमो का ज्ञान करवाता है।

4. भाषा शिक्षण के सिद्धान्त
(Principal of Language Teaching)

1. **अभिप्रेरणा एवं रूचि का सिद्धान्त** - (Theory of motivation and Interest) → भाषा अथवा उसकी पाठ्य सामग्री के प्रति रूचि उत्पन्न करना आवश्यक है शिक्षण प्रणालियो का चुनाव बच्चो की रूचि एवं आवश्यकताओ के अनुरूप किया जाना चाहिये।

2. **क्रियाशीलता का सिद्धान्त** (Theory of Creativity) →
भाषा शिक्षण के समय छात्रो को सतत क्रियाशील रखना आवश्यक होता है इससे छात्रो की अध्ययन में रूचि बढ़ती है जैसे कि प्रश्न पूछना एवं मौखिक एवं लिखित कार्य करना, बालको को करके सीखने में आनंद का अनुभव होता है ~~इस~~ इसपर महान शिक्षा शास्त्री जैसे - फ्रोबेल, मोंटेसरीने, डिवी ने इस सिद्धान्त पर बल दिया है।

3. **अभ्यास का सिद्धान्त** - (Theory of Principal) → इस सिद्धान्त के अनुसार व्यक्ति जिस कार्य को बार-बार करता है उसे शीघ्र सीख जाता है एवं जिस प्रक्रिया को बहुत समय तक नही करता उसे भूलने लगता है अतः भाषा शिक्षण के समय छात्रो को अभ्यास करते रहना चाहिये जिससे छात्र उसे शीघ्र ही ग्रहण कर पाये।

4. **समन्वय का सिद्धान्त** (Theory of Coordination) ⇒
मनोवैज्ञानिको के मतो के अनुसार यह सिद्ध किया गया कि बच्चे उन विषयो एवं क्रियाओ में अधिक रूचि लेते है जिसमें उनके वास्तविक जीवन से संबंधित हो अतः शिक्षक पाठ पढाते समय उसे छात्रो के जीवन से जोड़ने का प्रयास करते है।

5. व्यक्तिगत विभिन्नता का सिद्धान्त (theory of individual difference)

प्रत्येक बालक एक दूसरे से भिन्न होता है कक्षा में छात्रो में भी व्यक्तिगत विभिन्नता पायी जाती है, इसीलिये व्यक्तिगत विभिन्नता को ध्यान में रखते हुये भाषा शिक्षण करना चाहिये अर्थात अच्छे क्रम से सिखाना चाहिये जैसे बच्चा पहले सुनता है, फिर बोलता है फिर पढता है फिर लिखता है।
क्रम = श्रवण - वाचन - पठन - लेखन

6. अनुकरण का सिद्धान्त (theory of imitation)

बच्चे अनुकरण द्वारा जल्दी सीखते हैं बच्चे अपने शिक्षक के बोलने लिखने एवं गति आदि का अनुकरण करके वैसे ही सीखने का प्रयत्न करते है अत: शिक्षको को अपनी स्वयं उच्चारण करने का तरीका, बोलने की गति, लेखन स्वच्छ तथा शुद्ध होना या रखना चाहिये।

7. ~~शिक्षा~~ क्रम का सिद्धान्त (theory of integrated manner) -

भाषा शिक्षण का मुख्य उद्देश्य छात्रो को भाषा के सभी कौशलो में निपुण करना होता है जैसे कि श्रवण कौशल वाचन कौशल, पठन कौशल, लेखन कौशल इन सभी कौशल का समुचित ध्यान देना अति आवश्यक है। सभी कौशलो का सिखाने का क्रम सही होना चाहिये अर्थात उनका क्रम इस प्रकार है - श्रवण - वाचन - पठन - लेखन।

(8) शिक्षण सूत्रो का सिद्धान्त (theory of teaching formula) -

भाषा शिक्षण के कुछ महत्वपूर्ण सूत्र है शिक्षक को भाषा शिक्षण के दौरान इन सूत्रो को ध्यान में रखते हुये शिक्षण कार्य करना चाहिये इससे छात्रो में सीखने में आसानी होती है। एवं शिक्षण अधिक प्रभावशील होता है।

सूत्र –

सरल से कठिन की ओर
ज्ञात से अज्ञात की ओर
मूर्त से अमूर्त की ओर
विशिष्ट से सामान्य की ओर
स्थूल से सूक्ष्म की ओर
आगमन से निगमन की ओर
विश्लेषण से संश्लेषण की ओर

9. बाल केंद्रिता का सिद्धान्त → (Child Centered theory)

भाषा शिक्षण के समय एक शिक्षक को सदैव ध्यान में रखना चाहिये कि शिक्षण का केंद्र बालक है, बालक की क्षमता एवं स्तर आदि को ध्यान में रखकर शिक्षण कार्य करना चाहिए।

भाषा शिक्षण के सूत्र एवं विधियाँ

दूसरो को सिखाने के लिये दिशा निर्देश देने तथा अन्य प्रकार से उन्हे निर्देशित करने की प्रक्रिया को शिक्षण कहते हैं यह एक उद्देश्य निर्देशित क्रिया होती है, जिसमे सीखने की लिये सही मार्गदर्शन, दिशाबोधन, और उत्साह द्वारा प्रेरित किया जाता है यह एक ऐसी अवस्था है जिसमें शिक्षक ज्ञान देने के लिये अनेक क्रियाये करता है।

ज्ञान देने की यह क्रियाये शिक्षण सूत्र या विधियाँ कहलाती हैं। आमतौर पर एक ही विषय या चीज को पढाने के बहुत से तरीके हो सकते हैं, जिनके द्वारा एक शिक्षक छात्रो के मानसिक स्तर, उनकी आवश्यकताओ और शिक्षण की आवश्यकताओ को ध्यान में रखते हुये ज्ञान देता है इसलिये की शिक्षण को कौशलात्मक क्रिया कहते हैं क्योंकि यह शिक्षक का कौशल ही है जिसके द्वारा वह सही समय पर सही विधि या सूत्र द्वारा छात्रो को सही शिक्षा देता है।

सही और सार्थक शिक्षण के लिये कुछ शिक्षण सूत्र और विधियाँ →

1. ज्ञात से अज्ञात की ओर → प्राथमिक स्तर पर यह विधि सबसे लोकप्रिय होती है छोटे बच्चो को शिक्षण के प्रति उत्साहित और सक्रिय बनाने के लिये शिक्षक सदैव वही से प्रारम्भ करता है, जो बच्चो के अनुभव क्षेत्र में आती है और उन्हे पता होती है जैसे- लिखना या पढना सिखाने के लिये चित्रो का सहायता लिया जाता है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

बच्चें आसपास देख कर चित्र पहचान जाते है कि यह पंखा है और उसका उच्चारण भी जानते है उसी से उन्हे 'प' और 'ख' वर्णो के स्वरूप और लिखाई से परिचित कराया जाता है।

- <u>मूर्त से अमूर्त की ओर</u> ➔ इस सूत्र को स्थूल से सूक्ष्म की ओर या 'प्रत्यक्ष से प्रत्यक्ष की ओर भी कहा जाता है। स्पष्ट रूप से जो चीज आप सामने देख सकते है उसी से छिपी हुई चीज या ज्ञान के बारे में सीखना अधिक सरल हो जाता है मॉडल, चार्ट आदि के सहारे किसी वस्तु का वर्णन करना सरल होता है क्योंकि कोई भी घटना, वस्तु, चित्र या लिखित वस्तु सामने देखकर वो मस्तिष्क पर अधिक प्रभाव डालता है; समझने में सरल लगता है और लम्बे समय तक स्मरण भी रहता है।

- <u>सरल से जटिल की ओर</u> → वैसे तो यह सूत्र | विधि हर स्तर पर उपयोगी सिद्ध होती है, परन्तु प्राथमिक स्तर पर और कोई नयी चीज सिखाने हेतु काफी लाभदायक होती है इसमे शिक्षक विषय के सरल भाग से प्रारम्भ कर कठिन भाग तक जाता है जैसे - लेखन शिक्षण सदैव आड़ी - तिरछी रेखाओ से शुरू होता है वर्णो से शब्दो तक होते हुये वाक्यो तक पहुचँता है। रेखाये बनाना सरल होता है फिर वर्ण सिखाये जाते है। उन्हे जोड़कर सार्थक अर्थ वाले शब्द सिखाये जाते है।

विशिष्ट से सामान्य की ओर - यह सूत्र माध्यमिक स्तर से आगे के स्तरो पर अधिक प्रभावपूर्ण रहता है। किसी विशेष वस्तु के बारे में जानकार उससे जुडी अन्य सामान्य बातो का ज्ञान लेना अधिक सरल और रुचिकर हो जाता है जैसे - पंखे के बारे में सभी जानते है और यह एक विशेष प्रकार की मशीन है पंखें से प्रारम्भ कर शिक्षक विद्युत के महत्व के बारे में और विद्युत से चलने वाली कई मशीनो के बारे में जानकारी दे सकता है छात्र भी इस प्रकार बहुत रुचि लेकर समझने का प्रयास करता है।

- पूर्ण से अंश की ओर → इस सूत्र के अनुसार बच्चो को जो कुछ भी सिखाया जाए। उसे पहले पूर्ण रूप में सामने रखा जाए और बाद में उसके हर अंश को स्पष्ट रूप से स्पष्ट किया जाता है। इससे बच्चो में आगे पढाये जाने वाले विषय के प्रति उत्साह और रुचि जाग्रत होती है। जैसे - पाठ के मूलभाव के बारे में बातकर ही पाठ आरम्भ किया जाता है इससे बच्चे मूल भाव से जोड़कर पाठ के हर अंश को सही से समझ भी पाते है उसी प्रकार विज्ञान में हमें अपने शरीर के बारे में थोड़ी जानकारी देकर एक-एक करके शरीर के हर अंग की जानकारी दी जा सकती है।

आगमन से निगमन की ओर ⇒ इस सूत्र के अनुसार उनके उदाहरण देकर नियम निर्धारित किये जाते हैं शिक्षक इस विधि का प्रयोग अनेक विषयो में करते हैं, जैसे व्याकरण आदि उदाहरण के लिये - विभिन्न वाक्य लेकर उनमे किसी विशेष नाम बताने वाले शब्दो का चयन करने के लिये कहा जाए। फिर कहा जाए कि इन से व्यक्तियो के नाम, वस्तुओ के नाम और स्थानो के नाम अलग किये जाये। अब बताया जाये कि नाम वाले शब्द संज्ञा कहलाते हैं। और उसे अनेक प्रकार से भी बताया जाये।

अनिश्चित से निश्चित की ओर → इस सूत्र के अनुसार देखी हुई वस्तु के विषय में बालक अपनी सुविधा और आवश्यकता के अनुसार कुछ अनिश्चित विचार रखता है। इन्ही अनिश्चित विचारो के आधार पर निश्चित एवं स्पष्ट विचार बनाये जाने चाहिये। अस्पष्ट शब्दार्थो से स्पष्ट, निश्चित तथा सूक्ष्म शब्दार्थो की ओर बढा जाये। उदाहरण के लिये घटना वर्णन के आधार पर सभी छात्रो की राय जानी जाती हैं और फिर शिक्षक उसपर अपने स्पष्ट विचार रखता हैं की यह इस प्रकार हुआ हैं और इसका यही परिणाम होता हैं।

अनुभूति से तर्कयुक्त की ओर → इस सूत्र के अनुसार बच्चो को उनके अनुभवो के आधार पर सिखाने का प्रयास होता है, जिससे उन्हे सही व्यवहारिक ज्ञान रुचिपूर्ण तरीके से मिल सकते हैं। कक्षा में बच्चो से विभिन्न स्थितियो में हुई अनुभूतियो पर चर्चा की जाती हैं और उस आधार पर शिक्षक उन्हे उससे सम्बन्धित तर्क से अवगत कराता है।